Education for Peace and Values

शांति एवं मूल्यों के लिए शिक्षा

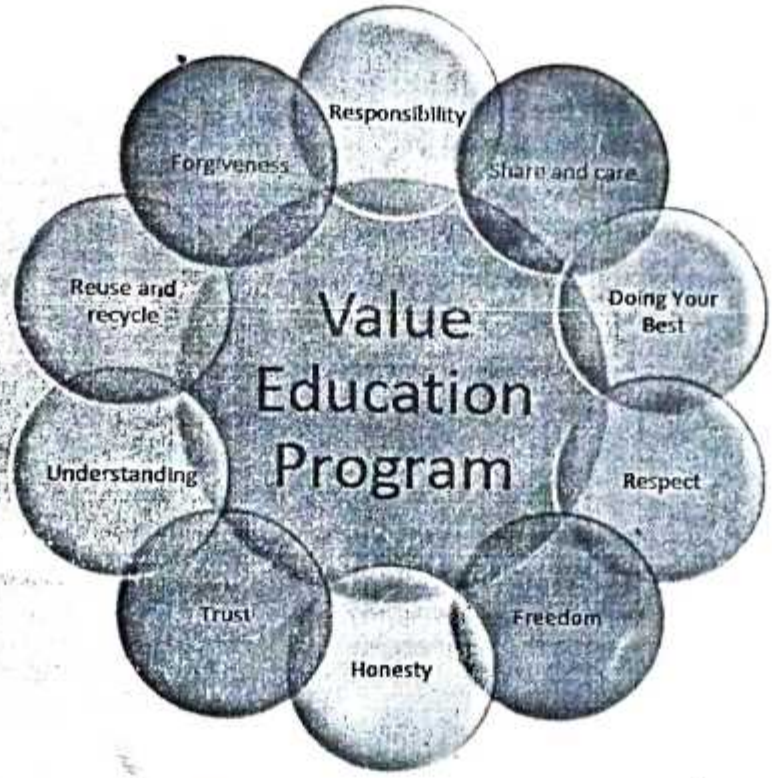

Dr. Chandrakanta Jain

© डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

Education for Peace and Values
शांति एवं मूल्यों के लिए शिक्षा

प्रथम संस्करण – 2016

ISBN : 978-81-89740-10-8

मूल्य – 600.00

वितरक – **प्रांजल प्रकाशन,**
एकांकी मार्ग, सागर, मो. 7694052106

अक्षर संयोजन – **रॉयल कम्प्यूटर्स**
वनवे रोड, सागर (म.प्र.) 470 002
दूरभाष : 07582-244289, 9425452106

प्रकाशक – कृष्णा कम्प्यूटर्स, सागर

■ पुस्तक में लेखकों के विचार उनके अपने हैं,
सम्पादक किसी भी स्थिति में उत्तरदायी नहीं है।

अनुक्रमणिका

1. विश्व शांति का मूल आधार : शिक्षा द्वारा समीचीन दृष्टि का विकास 01
   डॉ. चन्द्रकांता जैन
2. सामाजिक मूल्यों के विकास में शिक्षक की भूमिका 07
   धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ
3. शांति एवं मूल्यों के लिये शिक्षा के उद्देश्य व पाठ्यक्रम 14
   डॉ रश्मि जैन
4. मूल्योन्मुख शिक्षा : एक यथार्थ अनुचिंतन 22
   सतीश कुमार जैन
5. शान्ति और मूल्य आधारित शिक्षा के लिए कौशल, कूटनीतियाँ और गतिविधियाँ 27
   डॉ. रानी दुबे, मनोज कुमार सिंह
6. राष्ट्र निर्माण में मूल्य शिक्षा 33
   डॉ. पुष्पा खरे
7. मूल्य विहीन होते छात्र : विश्व अशान्ति के कारक 37
   डॉ. वीरेन्द्र जैन
8. मूल्यों के निर्माण में शिक्षा की भूमिका 43
   अइयाज अहमद खाँ
9. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के माध्यम से मूल्यों की शिक्षा 47
   रामाकान्त
10. डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक मूल्य 52
    मनोज कुमार पंकज
11. बौद्ध साहित्य में वर्णित शांति एवं मूल्य परक शिक्षाएँ 57
    विशाल विक्रम सिंह
12. शांति एवं मूल्यों के विकास में शिक्षक और समाज की भूमिका 64
    जय शंकर सिंह
13. शिक्षा में शांति की आवश्यकता : विद्यालयी शिक्षा के सन्दर्भ में 70
    धनन्जय सिंह यादव
14. शान्ति मूल्य एवं शिक्षा 75
    श्याम सुन्दर सिंह

9

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के माध्यम से मूल्यों की शिक्षा

रामाकान्त
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर म.प्र.

सामाजिक विज्ञान, मानव समाज का अध्ययन करने वाली शैक्षिक विद्या है। यह समाज के विविध सरोकारों को अपने अंदर समेटता है, इसमें इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र आदि विषयों की विस्तृत सामग्रियाँ सम्मिलित होती हैं। समाज की प्रकृति, क्षेत्र और कार्य–प्रणाली को एक व्यक्ति के जीवन–निर्वाह के लिए समझना बहुत आवश्यक होता है। इसके लिए सामाजिक विज्ञान का शिक्षण आवश्यक है। सामाजिक विज्ञान का महत्व न केवल तेजी से विकसित होते हुए सेवा क्षेत्र के रोजगारों में, इसकी बढ़ती प्रासंगिकता के कारण है, बल्कि एक विश्लेषणात्मक और रचनात्मक मस्तिष्क की नींव तैयार करने में इसकी अनिर्वायता के कारण भी है।

प्रायः यह माना जाता है कि मात्र प्राकृतिक और भौतिक विज्ञान द्वारा ही तत्वों का ही वैज्ञानिक परीक्षण संभव है तथा सामाजिक विज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक नहीं हे। परंतु यह पहचानना आवश्यक है कि प्राकृतिक व भौतिक विज्ञान की तरह सामाजिक विज्ञान भी वैज्ञानिक जाँच–पड़ताल हेतु उपयुक्त है।

सामाजिक विज्ञान स्वतंत्रता, समानता, विश्वास, पास्परिक सम्मान और विविधता के प्रति सम्मान जैसे मानवीय मूल्यों के लिए एक जनाधार का निर्माण करने और उसका विस्तार करने की नियामक जिम्मेदारी का वहन करता है। अतः सामाजिक विज्ञान का शिक्षण बच्चों में नैतिक मूल्य और मानसिक ऊर्जा प्रदान करने हेतु आवश्यक है, ताकि वे स्वतंत्र रूप से सोच सकें और अपनी विशिष्टता खोये बिना उन असामाजिक शक्तियों का सामना कर सकें, जिनसे इन मूल्यों को खतरा है।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण की अवधारणा का जन्म 1916 ई. में अमेरिका में हुआ, जहाँ स्कूली शिक्षा के पाठ्यचर्या में अन्य पाठ्सामग्री के साथ–साथ इसकी स्थापना की गई। परिणाम